

वल्लव वे शोच नृप ह कश्च राजाय गथा गगाया इह न सम्यक् वद्धा
 या गयथा ॥ ॐ ॥ श्री २ सं २ समय २ भर्तृ २ दान २ समा प्रायश्च
 ना लं व ग लं व य ॥ ह व नि म दान जा नि ला तं व नि रा कृ त नि
 छि ला स र्व वि द्या ना वि द्या ना वि सि णि ग सा द्या ॥ धन २ ॥ धन त्रि च त्र
 न क र त्र त्र ॥ व ग म म ग ॥ धनिय त्रि क र्म न य जा ॥ स्नान विधि धं रु नी
 रु ल मूल गा म्बू त्रा दि दं दा द न य ॥ स म र्म ॥ ॥ धा धन लि द्या न पि रु थ
 य विधि (थं) कृ ण धि न क लि ला म्बू वि र्म वा य ॥ या ह स लु म्बू य

ग्वमागा अग्नि गुत्र साकि था सं वर्धधर्म सद्यं कृत्यादि ॥ धन
लिक भयणि का था येन याहं विष्ठथयके अद्य का सं वा कृत्य
दयं येन केर्मनया यविधि थं निमिन का या अस्त्रियु राव लो
कि कपिष्ठ उधन ना थं कत्र साय ना थं अय न मि ना इ र्ज नि य त्रि लो
धन यस्म क र्था थय इ र्ज नि भा र ना थं स र्ज या क का म ना र्थ अ
स्मि दि न दि व यं ग न अ मू क ना म ध्व या य स र्वा त्र नि या क का म
ना ये न म नू ग क उ स थ ह ॥ धन म ठा ल थि त्र के स्वा न गान ग नि

विय द क ला अगं वा कृत्य के धूय मगन इय के विसर्जन म उ ल नं
विष्ठ लं धय ॥ वायु की क ठ न अ स्त्रियु राव यय के ध नि न या त्र १३ म
नु ॥ न गो म न वा रु न का स्त्रि लो क का त्रान धि मू य कृ ग थ त्र कं द व
ना जं याम त्र ग र क व क्कान र व र्ज धनं विष्ठ सु नि या थ कं ग की त्रं १॥
दी वा हि क कि या का त्रं य म ४ क ल म ध न व त्र नं या गी गृ व थ त्रि लं व
स्त्रि क र्ज गी क ध त्रं न पा ल य गाय ध त्रं वायु आ वा श्व स वी द वा स त्र
दि न स म ग क स म्य क्क वी धि नी य मा य नं दान य न अ मू क ना म

ध्याय स्वस्वावगियाक कामना धनगगल ७ सुयग ॥ थगिज
लियूयक यान वाक काय ॥ नदीस शीयक यान वाक ॥ उंय प्र
महाय प्रय प्रस्यग हं दिवंगगजमूक नाम ध्याय स्वस्वावगिम
नगकुलु स्वथाहं ॥ थनमउ लधित्रक सकनस्यनं स्थानगन या
थसमाक ४ विसूई नस्यनू रंगयूजादकि ॥ आसिवाग कृम
नंमउ लयागानं ज्ञाय ॥ ७० निज लियूयक विधिसमाक ॥
॥ उंन हेशमहात्रस्र तस्र संर वत त्रकित्र ॥ त्रस्रमा या विगु

गस्यसुसंगत्रस्य गसंगलंर वडुयनमारिषक ॥ ॥ यूष्यादियूजा
धूय दिय नेवयादि धैवयग ॥ ॥ यूष्यान्यासा ॥ उंमून १ महामून
सादा ॥ उंआकमूनय सादा ॥ उंवजया लय सादा ॥ उंवज ह्रियहं सा
दा ॥ उंअंखचकवलि नह सादा ॥ उंनलापि वहं सादा ॥ उंयआपि
वहं सादा ॥ उंविष्णुपि वहं सादा ॥ उंनजापि वहं सादा ॥ उंअजा
पि वहं सादा ॥ उंशुगोपि वहं सादा ॥ उंवज विकिप्रिनहं सादा ॥
उंभीगागयगं हं सादा ॥ उंलाभयहं सादा ॥ उंमालायगं सादा ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ मेरी सुन माय सादा
॥ ॐ अमावस्य दिने सादा ॥ ॐ सर्वपापहर्त्र सर्वपापविनाश
नी सादा ॥ ॐ सर्वसिद्धिदायक गणेशाय नमः ॥ ॐ गन्धर्वसिद्धि
सादा ॥ ॐ सुत्रंगमहं सादा ॥ ॐ गगनगंजहं सादा ॥ ॐ स्नानकरु
हं सादा ॥ ॐ अमृतप्रायहं सादा ॥ ॐ चंद्रचंद्रय प्रायहं सादा ॥
ॐ रुद्रप्रायहं सादा ॥ ॐ द्वालीनययुक् ४८ हं सादा ॥ ॐ वज्रग
हयिहं सादा ॥ ॐ अक्रमनियहं सादा ॥ ॐ यगितानकटहं सादा

॥ ॐ समस्तपुण्यहं सादा ॥ ॐ वज्रपासायहं सादा ॥ ॐ वज्रं कुंज
हं सादा ॥ ॐ वज्रपाशकी ॥ ॐ वज्रहृत्पदं ॥ ॐ वज्रां वनदी ॥
॥ यं लाघवकुमि ॥ विष्णुगंसर्वसकल्यलावालावविवर्जित ॥ ॥
सिंहनमस्यामि शुद्धयुक्तमिनिर्मलं ॥ धनजाय ॥ ॐ अकमून
यहं ॥ ॥ धन १०८ ॥ यथमात्रिका नमस्त्वयि ॥ ॥ धनमस्तु
धित्तक ॥ सकलसुखं नानुन ॥ कुमि ॥ ॐ नमस्तु ४८ ॥ अस्मिन्नाय ध
न्ययुक्तयुक्त ४८ ॥ धनयुक्तं जगत्सत्तम धन सर्वदुर्गमि ॥ नमस्तु

ॐ सर्वपापगतिगहनविनाशनीहंरुद॥ ॥००॥ व्याहृतिनागन॥ ॥
गसंखनसिनायकावनमस्तु॥ ॥ॐ नमो भगवते सर्वज्ञानाय
निश्चयनराजाय गगनाय इहं गेसम्यकं वृद्धाय गद्यथा॥ ॐ एता
नश्चिन्माधनश्च सर्वपापविशुद्धन शुद्धविशुद्धश्च सर्वकर्मविनवि
शुद्धश्च धर्मविशुद्धस्तथा॥ इइ॥ ॐ कंकनिश्चाराय निश्चिनाय नि
यमिदगहनश्च सर्वकर्मविनयत्राणि॥ अमुकस्य स्वधाहं॥ धनियसे

मन॥ ॐ अमाद्याय गिदगहनश्च सर्ववतनविनाशनिहन्॥ अमु
कस्य आवतनानिहंरुद॥ यदेगन्धा॥ ॐ तत्त्वश्च महा तत्त्वसं
वत्तत्त्वकिन्नन तत्त्वमात्रा विशुद्धत्वाय॥ अमुकस्य सर्वपाप
नहंरुद॥ धनधुरिणा नानय॥ ॐ अमनश्च अमनाहवे अमन
संरुव अमनविक्रान्तमिन्॥ अमुकस्य सर्वकर्मकृतयंकत्रिय
स्वधाहं॥ नसाखलं खनया॥ ॐ यत्त्वश्च महायत्त्वा अयत्रिमिनय

अथ यत्र मितायुष्यं ज्ञानसत्ता त्रायैकामि नियम्यथा ॥ हा य
दा हो तं खगया ॥ उं यत्र मदाय प्र यमी एवे अमक स सुखाव
यांग रु लु स्व अहं ॥ धनममुलस स्या न रु हा लन स्यां तावना
॥ ननाममुल मधसा क मनि पूर्व वजया ति द क्रि ता व या प्रिय
यश्चि मे सं व च क व रि उल न विजा प्रिय अग्रं ने जा गा गी ने म हा
विधं सक वाय यां वि कि त्रि ही ॥ ॐ मा न्यां जी ना ग य गु य उ दा ने

वजां कृता दिका नयू ध्या दि द व गा य त्रि दि ना पुर्ण समय सत्ता
ज्ञान सत्ता वाहनं रु ग क म दा म नु न पूजा सा व य न ॥ ध्या मि ला
जन विधि थं पूजा ॥ पू य न्या ग ॥ ॥ उं मा क म न य हं सा हा ॥ उं
वज या ता य हं सा हा ॥ उं व जा ॥ ॥ उं मा क म न य हं सा हा ॥ उं
सा हा ॥ उं वि क या प्रि य हं सा हा ॥ उं न जी ना सि न हं रु ॥ उं व ज वि
थं सि न हं रु ॥ उं व ज वि कि त्री न हं रु ॥ उं जी ना ग य गु हं रु ॥ १
१ प्रि य हं सा हा

॥ॐ वज्रनाभं ॥ॐ वज्रमालयां ॥ॐ वज्रगीर्णक्रीं ॥ॐ वज्रनखं अ४
॥ २ ॥ॐ मेघीयसूत्रनायका ॥ॐ अमाद्यदिभिर्नखा ॥ॐ सर्व
यायजुःसर्वायायविलम्बनं ॥ॐ सर्वलोकगमादिघातम
नं ॥ॐ गन्धर्वसिन्धु ॥ॐ सुत्रंगमं ॥ॐ गगनगजं ॥ॐ शान
कं ॥ ३ ॥ॐ अमरगुरुं ॥ॐ चन्द्रचन्द्रगुरुं ॥ॐ रुद्रपात्रय
॥ॐ छात्रीनयुक्तं ॥ ४ ॥ॐ वज्रगुरुं ॥ॐ अकयमनिहं ॥
ॐ युतिरानकं ॥ॐ समनरुद्रं ॥ ५ ॥ॐ वज्रयूथं ॥

ॐ वज्रधृयं ॥ॐ वज्रावलाकीर्णक्रीं ॥ॐ गन्धर्वजं अ४ ॥ॐ
गन्धादिघातं ॥ॐ वज्रांकुशजं ॥ॐ वज्रपाशक्रीं ॥ॐ वज्रस्त
यवं ॥ॐ वज्रावलादीं ॥ ॥यंलाचमुनि ॥ र्यधर्माद्यादि ॥
॥अस्मिन् स्थाने रुद्रालगयरावना ॥ ॥गन्धावजयज्जलाय
कन्या ननजलावी सुमन्युयनिकृता मीनस्य मध्ययिगाका
नयक सिद्धाय त्रिशीलाय मनिहगवान् महावेगवान्
सर्वकवेर्लाधग धर्मयुक्तमूढा ४६ दीप्यमानं यक्षग ॥

^{४५} वजां कूदिना स्नानसंख्यामायाह नदिताया ॥ ॥ धनधूपनि
^{३२} लाज्जना ॥ पुनस्ताना ॥ वृणस्यं ॥ यत्समगतसकत्रसत्यदिनत्रगस्य
 वृद्धवृद्धस्य हाषत्रहीगस्य विवृद्धवृद्धे पुश्चागसंगत्रयित्रस्य ग
 त्मगतं रवउगी यत्र मातिषके स्यत्समगतं सत्रनत्राष्टसत्रपूजिन
 स्य धर्मस्य गनकथिगस्य अनुरात्रमीलाकगुययुनिदिनस्य मि
 नात्मकस्य गत्समगतं रवउगी यत्र मातिषके ॥ यत्समगतं युवनध
 र्मत्रस्य नित्यं सत्यनिकस्य जिनबंधवत्रस्य नित्यं सत्ययकात्रयि

विनाशमूक नामध्याययुथममयदिसंसिधकाकयिउं स्वानपि
उं कृष्णसनमयुगिहिंगां॥ त्रयनेआसननयक॥ यगासनंययय
मिस्यध॥ त्रय॥ उं अहिकमनंयथयुगियदस्यध॥ अथिहिन॥ उं
वसंधनियुगियागयस्यध॥ थनजान्वउथसि नकसि हामूकम
कायाडा जानकंगयक॥ अथ यमगयीगाअमूक नामध्याययुथ
मसिनमथिसंसिधकाकयिउं स्वध॥ स्वानयिउं उथं॥ थगिधून
काडा दथसुयुगयिउं थयक॥ उथ कृष्णसननयक॥ त्रयनेआसन

नयक॥ उं यगासनस्यध॥ त्रयनदायक॥ उं अहिकमनंयथयु
नियस्यस्यध॥ त्रयगनथियक॥ उं वसंधनियुगियस्यध॥
जान्वत्रयेनकसि हामू जानकंगयाडा॥ अथ यमगयीगाअमूक
नामध्याययुथमसिनमथिसंसिधयनयिउं स्वध॥ १॥ निद्रया
अथ यमगयीगाअमूक नामध्याययिगियययुत्रयवसंसिधदि
निययिउं स्वध॥ २॥ हगियनामिकासंसिधयनिययिउं स्वध॥
माद्रया॥ ३॥ त्रयर्थस्यगमंसिधययुथयिउं स्वध॥ यद्रया॥ ४॥

पंचमहदयसंसिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥ ठाकुर्या॥ ७ ॥ अष्टमहदयसं
सिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥ खकुर्या॥ ८ ॥ सप्तमहदयसंसिद्धयैकमयि
षुस्रध्वा॥ कसकुर्या॥ ९ ॥ अष्टमहदयसंसिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥
याकुर्या॥ १० ॥ नवमहदयसंसिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥ गुकुर्या॥ ११ ॥
दशमहदयसंसिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥ जिंकुर्या॥ १२ ॥ वाक
याय जिंकु ३ थं अथयैकमयिषुस्रध्वा॥ काकयिषुस्रध्वा॥
जिंकुथयमात्र॥ लंखकयत्रासगया॥ लखवियक॥ वाकथ॥

धममित्रमयिषुसंसिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥ मत्रजागथं गयक॥
विगसिथुज्जमस्थानरुत्रमलधुनिमगगायज्जकन॥ मउतथिन
कस्थानगनकी॥ उमून२महामूनखाहा॥ ३ ॥ गीगमाकयत्रया॥ मि
नाइत्ययगमयिषुसंसिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥ धमेत्रनासिकावाइकिक्का
लस्यचुगीदनं॥ दधिवकगिजानूयां गीयनरुस्रयादया॥ अना
दीसर्वगमयिषुसंसिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥ धनयुगाजनिविय॥ अथ
काया॥ जावंगमयिषुसंसिद्धयैकमयिषुस्रध्वा॥ धनत्रिकुगदासगया॥ गालयान

मीराक इयके ॥ किगन के ॥ विमरुन ॥ देवाथियके ॥ ॐ आकासधनु
गह सादा ॥ पुगयिउगधुधं ॥ पुगयिउधय ॥ काकयिउ खानयि
उगधुधं ॥ काकयिउ खानयिउधय ॥ हायाडी युयकनधुधय ॥
यायदसनायनय ॥ मालहू याडीयिउथयाधस विदिहायके ॥
काकयिउडी खानयिउडी खोसियिगाथिनागयके ॥ थमिदस
यिउधयके विधिसमाफ ॥ ५५५ ॥ गहसा ॥ अगयायागकी
गहसहू यकुगगधननयथरात्राददयके ॥ दशकर्मयिउ

थययाग ॥ हायाजुसिअनायकाहाडी कासंवेत्यथय ॥ अगंदय
कमदयीडी कंसवेत्यदयके वृसिसगीथसजहविधनसकि
कयुनिहायाय ॥ काथगजटक १३ अनथकटलेजनंथकट १०
नंथकटलेजनंथकटलेजनंथकट १० अनंकजानरुकिंया २ गत्र
रुकिनिंथकट २४ कनिगशालामंया १ थननवेत्यदयके ॥ ० ॥
हकाया मिगयुक्रयालाहानिनगयलंरवकायनक ३४ ६५
निकायनक ५४ पिखात्रयुस पूयकयन पूत्रकाकेनयके ३

वायन नव के मान रसिसका मास मान द्रव्य के ध्वनि नयि सं
सख यासल जा मंदिय जने नख नान के ॥ धन लिख सखा सं प्रि
लुथय ॥ क्रयां हि सस्य मिश्रण कसनाय के लपन लाय के ल
खंदाय लाहानिय के यलयासन काय के अथ अमूक नाम धाय
काक पिउं स्वधा ॥ ज जया खगयक ॥ दिवंगन अमूक नाम धाय त्यान
पिउं संयं स्वधा ॥ ज जया खगय ॥ दिवंग अमूक नाम धाय पुं
न पिउं संयं स्वधा ॥ द धूसगय ॥ ग्व ३ थय विधि थं य जायाय

नका कायनामकल जा सं दृष्टाद्वा जगय द्वाय ॥ पुन अलिग न
पु सं द्वाय ॥ उ नमा रगवत्य सव इमं नियमि ल ॥ धन त्यादि ॥ म पुत्र थि
न त्यान मन ॥ कि मन ॥ ग्व न चन लं च धा लाय के सिक म सुधा रा
क इय के जावन सव सिला त्यादि ॥ हा गा कन विग क मिगय के लख
कायन राया ज दृष्ट के ॥ थ निदिय ॥ लिका क्रिया विधि श ना ॥ ५ ॥ ५ ॥
समिक दू नि सं व स पिउं थय ॥ स दू दू दिवंग ग श थ स म उ ल की
य अलि सिल विधि थं य ॥ हा दू दू सिल ॥ न स दू दू दू दू वां

इदमपि यथाविधि

द्वे ल्मा धय श्दिवगग सगनिमार्ग दसनाय इर्जनिमार्गविमर्का
 यः ३३ ॥ १८ ॥ मनुगच्छुस्य धाहं ॥ थमनुनंजुस्ति पूय के नरा ॥
 ५५ ॥ १९ ॥ नमावृद्धाय ॥ दगयिषु थय के याग विधि माहा ॥
 ॥ स्वसिसि ॥ कृ कृ लकायननपूय के दिय सया खा जान पिषु
 शीया सनगय के लिका किल्या मजाग (थं) शना ॥ दगयिषु थय के
 याग स्वसिसि रुन ये सरा राउ छा य के दडा या जडा स्वजस इइ
 लंख थय नायाय थन इइ लख गया सलिसिस् कि ग्यनन के ॥

ॐ वज्र गज नास्य त्रयं जत्र याग विदमास यूषां नमः ॥ धि त्रया ययि
कुमास यूषा नमः ॥ धन वै रथ रा द स के कि ग न के ॥ ॐ महा भू
भाना धिय नी इर्ज निय निष्ठा धन वै रथ का त क ०० दं मास यूषां
नमः ॥ धन मनान याय के ॥ ॐ महा भू भाना धिय नि इर्ज निय नि
त्ता धनु वै रथ का त कं य जा द कं स्था हा ॥ द डी ना हा नि न धिय कुं
नय ॥ ॐ न मा रु ग व ह वै रा च न त्या दि ॥ घ त फ लि ॥ ॐ वूं आं जिं
खं ॥ इइ ॥ ॐ गुं आं खं हूं ॥ ॐ ज थ हि जा ग मा गुं न त्या दि ॥ सिंग

सिंधुज्जम ॥ स्नानमयक वा कथं ॥ ॐ म हाम्भाम्ना धियनि
सर्वइर्गनिय तिल्लधनं ये ह्यहं नक रनु सिंधु ननु वन सादा ॥
दं जया रुक वा कयाय सकनां थ ॥ इतमूत्रादिधुनि मग विय ॥
धनं जल यया स इ इ नख थ छा ज हाय के ॥ यमया स वि मा र्था य र्य म
दं तु निहं य ग ॥ यमहा त्रं वि नि मूकं ग हि मां स त न ज यं ॥ स्नान म न ॥
ॐ यत्थ १ म हाम्भाम्ना सादा ॥ ॐ न मा र्ग व य स र्व इ र्ग निय तिल्लधनः
ना जाय ग था ग ना या १ २ न ह र्क स म्य कं वृ छा य ॥ ग य था ॥ ॐ ल्लधन १

विल्लधन १ स र्व विल्लधन ॐ शुद्ध वि स द्ध दि वं ग न्ज मू क ना म थ ॥
याय स र्व क र्म व त्र न विल्लधन स थ ॥ ॐ न मा य म ध र्म ना जा य म
द्व र्ग नि क सं का सं म हा न्ज य रा स त्रं स र्व या य ह यं गु स मा र्ग या ॥
मि गं त्र न य यं द कि न म हि या त्र र क पु व र्क गु वि क मं द द ह र्क म
म हा धा त्रं पु ना धि य म र्ध धि कं ला य य ग ॥ ग नं नि र्गं ध र्म ना र्ज ॥
न म सु र्ग ॥ ध न द व या रु ज न या ना स न य न य नि र्ग क थ य १ ॥ ध
न का क यि ३ स्नान यि ३ नि थ य ॥ कृ न हा स ग य के ॥ अ य य म्भ ग

नानां सर्वसायनियत्रयम् ॥ नमस्तु ह्रीं श्रीं क्लीं ॥ नमस्तु ह्रीं श्रीं क्लीं ॥
 दनं यदुमात्रवन्तं ह्रीं सत्त्वा नं वाधियाप्यनं ॥ नमस्तु ह्रीं श्रीं क्लीं ॥
 यज्जगत्पुण्यं ह्रीं नं धातुं जगत्सर्वधर्मत्राजं ह्रीं वाप्यनं ॥
 लाभ्यमाना गन्धर्वा गन्धर्व्या दद्यात्तु ह्रीं ध्रुवादिद्यात्तु ह्रीं
 यगन्धर्वी नमस्तु ह्रीं ॥ ह्रीं नमस्तु ह्रीं गावत्यं ह्रीं क्लीं वाप्यनं ॥
 क्लीं ह्रीं धाम्ना वनिर्ज्ञानं ह्रीं वाप्यनं नमस्तु ह्रीं ॥ वेदकादी ह्रीं
 यत्तु ह्रीं वाप्यनं ॥ मुदिनदीदशदिश ह्रीं वाप्यनं

लवनमसुर्ग ॥ विश्वकोशोपाध्यायः लोकपालचण्डिका । अग्नि-
 कर्मवायुवरुणाधियगिनमसुर्ग ॥ जननीपुत्रार्जनसमुर्ग
 मङ्गलोगमहाकजस्यध्यायनामनि ॐ दंष्ट्रागुम्दाहने ॥ ॥
 क्षाणादिमालकी, गणाक्षर, क्रमायन, आसिवाग, मङ्गलविर्जसे
 ॥ सग्वनमय, रंगयुजा, दक्ष, किर, निसत्रा, दगुत्रिसमय
 सुयक ॥ अगाक्षर ॥ ॥ ॐ गि अग्नि मित्रया विधिसमाफ ॥
 ॥ १२॥ अगाक्षर ॥ अगाक्षर ॥ अगाक्षर ॥ अगाक्षर ॥ अगाक्षर ॥

पु शोमउलपूजा॥ इखवनक, कु कुजका, मउलनियूजा, मलजा
 पु नथं, अस्मि सिप्रधूनकाजी, मउलधिनक, खानगन॥ सग्वनय
 पु ॥ क्रमायन, समसंधूनकाजी, ग्वत्रधोमठायनज, यंरुगीर्थकु
 पु य अस्मि नस्या॥ धनलिदगपिउथयक, शायक धूनकाजी, ग्व
 पु मिउवनकाका इखवनक, यंरुगहविय, लिठापिउथयक्र
 पु यागविय, वसंधिनक॥ धनलि कायनास, लंखयायनथन, स
 पु र्थियागनिनक, धान ३०० सुदवनायागयात्र ३ धनलिगुत्रया

यानिसगयवा, न ३ धूनकाजी, गुत्रसाचाकनदूलाजी, दडनिवा
 य, कलिहाजायाजी॥ अनयाग्व २३ इधन, लंखधनथसं, पु
 सि०० नासडा हाजी, जरुजीलन, सक्रियुगिहागाल लाचकं
 जाडाजी, अस्मिजी, गथिरासाधनयासं, नक्रयैयथचकं क्र
 १३ कंसयैयसइथड, क्रिसक्रयया अगनयैय इधनक, पुनिहा
 यायगुत्रमानकायम, क्रक्रदगपिउथनककाया॥ निद्रय
 सि०० नासडा य, यैयसक्रियुगिहायाय, धिसानमूमा